[This question paper contains 6 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 2503

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'पूस की रात' कहानी के 'हल्कू' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. 'तीसरी कसम' कहानी की मूल संवेदना का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी के माध्यम से समाज की किस समस्या को उठाया गया है – सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. 'पाजेब' कहानी के बालक 'आशुतोष' की चरित्रगत विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

"'परिन्दे' कहानी शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ रचना है" – विश्लेषण कीजिए।

4. 'सिक्का बदल गया' कहानी की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'जंगल जातकम' कहानी की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) बोधा गाड़ी पर लेट गया भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिए

तो, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि 'मुझसे जो उसने कहा था – वह मैंने कर दिया'। गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा – 'तेने मेरे और बोधा के प्राण बचाए हैं। लिखना कैसा ? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था ? 'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कुछ कहा वह लिख देना और कह भी देना।'

अथवा

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपडे पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोक कर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं कांप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा – 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

(ख) दुल्हिनया पान खाती है, दूल्हा की पगड़ी में मुँह पोंछती है। ओ दुलहिनिया, तेगछिया गांव के बच्चों को याद रखना। लौटती बेर गुड़ का लड्डू लेती आइयो। लाख बरिस तेरा दूल्हा जिये ! कितने दिनों का हौंसला पूरा हुआ है हिरामन का, ऐसे कितने सपने देखे हैं उसने ! वह अपनी दुलहिन को लेकर लौट रहा है। हर गांव के बच्चे तालियाँ बजाकर गा रहे हैं। हर आँगन से झाँककर देख रही हैं औरतें। मर्द लोग पूछते हैं, 'कहाँ की गाड़ी है, कहाँ जाएगी ?' उसकी दुलहिन डोली का परदा थोड़ा सरकाकर देखती है। और भी कितने सपने......

अथवा

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाएँ जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहने, मेज किस साइज की हो.... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए

बोले- "तुम सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन लो, माँ। पहन के आओ तो, जरा देखूँ।"

(ग) सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था की क्या कहे। वह चाहती थी की सभी चीजें ठीक से पूछ ले। सभी चीजें ठीक से जान ले और दुनिया की हर चीज पर पहले की तरह धड़ल्ले से बात करे। पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी। उसके दिल में ना जाने कैसा भय समाया हुआ था। अब मुंशीजी इस तरह चुपचाप दुबके हुए खा रहे थे, जैसे पिछले दो दिनों से मौन व्रत धारण कर रखा हो और उसको कहीं जाकर आज शाम को तोड़ने वाले हों।

अथवा

रमेश चौधरी के शब्दों में छिपी आंच को उसने महसूस कर लिया था। वह अभी तक सोनकर की मौत से उबर नहीं पाया था कि रमेश चौधरी के इस फैसले ने उसे पेशोपेश में डाल दिया था। सोनकर का चेहरा बार-बार उसकी आँखों में उतर रहा था। राकेश अपने भीतर उठने वाली बेचैनी को जितना दबाने की कोशिश कर रहा था, वह उतनी ही तीव्रता से बढ़ रही थी।

वह फिर से कुर्सी पर बैठ गया था। सोनकर का चेहरा उसे उद्वेलित कर रहा था। सोनकर की जददोजहद राकेश की अपनी पीड़ा बन गई थी। उसने एक गहरी सांस ली और झटके से उठकर खड़ा हो गया था।